PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 5, ISSUE 5

भारत संभावित विश्व शक्ति

डॉ0 अशुतोष राणा
सुपरवाइजर
विभागाध्यक्ष भूगोल
सी0 एम0 जे0 विश्वविद्यालय,
शिलांग, मेघालय भारत

अजय कुमार
शोधकर्ता
भूगोल विभाग
सी0 एम0 जे0 विश्वविद्यालय,
शिलांग, मेघालय भारत

प्रस्तावना:-

भू राजनीतिक दृष्टि से सिद्धांतों व तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में 'भारतीय उपमहाद्वीप' का विश्लेषण करने के पश्चात यह पता चलता है कि इस संपूर्ण उपमहाद्वीप का प्रमुखतम् देश भारत भविष्य की विश्वशक्ति बनने की पूरी संभावना रखता है; यह देश केवल अपने लिए विश्व की सामर्थ्य को बटोरकर; मात्र अपना विकास नहीं चाहता, बल्कि समस्त विश्व को अपनी सामर्थ्य और अपनी पोषक-दृष्टि से समुन्नत तथा श्रेष्ठ बनाना चाहता है और ऐसा करने करने में वह समर्थ था व आज भी समर्थ है क्योंकि शक्ति और सामर्थ्य होने के साथ साथ विश्व कल्याण की भावना उसके संस्कारों, उसकी मिट्टी में निहित है। भारत केवल शक्ति अर्जित कर विश्व में सबसे बड़ी शक्ति बनना नहीं चाहता, जैसे कि ब्रिटेन, रूस ,जर्मनी व फ्रांस बने और आज अमेरिका सबसे बड़ी शक्ति बन, अपनी आतंक भरी छाप विश्व पर जमाये है। इन सभी देशों में विश्व की सोच नहीं, विश्व कल्याण की दृष्टि नहीं, बल्कि ये सभी शक्ति संपन्न भू राजनीतिक इकाइयां हैं, जो अपने लिए औरों को दबोचती और शोषित करती हैं।

भारत की शक्ति, केवल भारत के लिए नही, विश्व के लिए है। इस दृष्टि से हम निम्न तथ्यों पर गंभीरतापूर्वक विचार करते हैं -

ज्योतिषीय-गणित, धरातलीय स्वरूप, सागरीय परिदृश्य, यातायात मार्गों का स्वरूप संसाधनों तथा जनशक्ति का आधार देखते हुए भारतीय उपमहाद्वीप विश्व के

केंद्र में अवस्थित दिखाई पड़ता है -"किसी भी देश का देशांतर के अंतर्गत अधिक विस्तृत होना या सीमित होना विशेष महत्व का नहीं होता। महत्त्व अक्षांश के अंतर्गत क्षेत्र के विस्तार का होता है और यह भी महत्वपूर्ण है की किन अक्षांशों के मध्य कोई राष्ट्र स्थित है।"[1] भारत भूमध्य रेखा के उत्तर 8^0 4' अक्षांश से 37^0 6' अक्षांश तक लगभग 3214 किलोमीटर लंबा और 68^0 पूर्वी देशांतर से 97^0 25' पूर्वी देशान्तर तक लगभग 2933 किलोमीटर चौड़ा भारत का विस्तार है। कर्क रेखा भारत के मध्य से होकर जाती है। भारत का उत्तरी त्रिभुजाकार भूखंड शीतोष्ण कटिबन्ध में तथा दक्षिणी त्रिभुजाकार भूखण्ड उष्ण कटिबंध में स्थित है। दोनों ही भूखंडों की भिन्न-भिन्न विशेषताएं हैं। इन विभिन्न विशेषताओं वाले भूखंडों को एक भौगोलिक इकाई के रूप में उपस्थित करके प्रकृति ने हमें समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाने की शिक्षा दी है। भारत की कटिबन्ध स्थित के दोषों को भारत का आकार और उसका स्वरूप दूर कर देता है। पूर्वी और पश्चिमी घाट में समुद्र का प्रभाव नदियों का बाहुल्य एवं ऊंचाई उष्णता को बहुत कम करते हैं।

भूमध्यरेखा विश्व के बीचो बीच की होकर खिंची हुई मानी गई है। इस मध्य अक्षांश पर भारतीय-उपमहाद्वीप उत्तर की ओर विराट-शक्ति क्षेत्र बन खड़ा है और इस प्रकार समर्थ बना खड़ा है की विषुवत रेखा की तपन और वर्षा की कठिनाइयां उसे दबोच नहीं पाती हिन्दमहासागर भारतीय उपमहाद्वीप को उष्णकटिबंधीय कठिनाइयों से मुक्ति दिलाता है। यह स्थिति भारतीय उपमहाद्वीप को सामुद्रिक स्थलीय दोनों ही प्रकार की स्थिति प्रदान कर उसे समुद्र का स्थल दोनों की सम्पन्नताए व सुविधाओं का मुक्तहस्त से वरदान देती है। प्रमुख विचारक बोदिन ठीक लिखते हैं --: " कि उत्तरी क्षेत्रों के मनुष्य शारीरिक शक्ति संपन्न एवं मध्यवर्ती क्षेत्रों के मनुष्य राजनीति के नियंत्रण के लिए श्रेष्ठ होते हैं।"[2] भारतीय उपमहाद्वीप इसलिए विश्व भर का पालन पोषण करने वाला देश रहा, सोने की चिड़िया रहा और भारत कहलाया। भारत का आर्थिक ही भरण पोषण करने वाला। राजनीति के क्षेत्र में वह विश्व का प्रकाश बना और विश्व गुरु कहलाया।

<u>शब्द कुंजी.-</u> ज्योतिषीय गणित, त्रिभुजाकार, जला डमरू, सहयाद्री, उष्ण कटिबन्ध आदि।

परिचय-: अक्षांशों के मध्य पर तो भारतीय उपमहाद्वीप है ही। जैसे शून्य देशांतर रेखा ग्रीनविच से होकर जाती हुई मानी जाती है। वैसे ही समय निर्धारण के लिए अतीत में शून्य देशान्तर रेखा भारत के उज्जैन से होकर जाती हुई मानी गई और उसी से समय का निर्धारण होता था, जिस आधार पर भारतीय उपमहाद्वीप अक्षांश व देशांतर की दृष्टि से केंद्र में स्थित रहा-

अफ्रीका, यूरो,, एशिया व ऑस्ट्रेलिया सभी को एक चित्र में सामने रखते हुए यह स्पष्ट दिखाई पड़ता है की विषुवत रेखा पर हिंद महासागर में यह शक्ति क्षेत्र सभी महाद्वीपों के बी ठीक केंद्र में स्थित है। जिसे मानचित्र संख्या 2.2 से आसानी से समझा जा सकता है। " भारत की पूर्वी गोलार्द्ध में स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंद महासागर के उत्तरी सिरे पर यह देश इस प्रकार स्थित है कि यह पूर्वी गोलार्ध के मध्य में पड़ता है। यूरोप व अमेरिका के पश्चिमी भागों से भारत लगभग समान दूरी पर स्थित है।" [3] यह विशाल खंड ऐसा प्रतीत होता है मानव यूरोप एशिया अपने विस्तार स्वरूप अफ्रीका ऑस्ट्रेलिया को भारत के पूर्व पश्चिम से अपनी भुजाओं में बांधता हुआ इस विशाल भूखंड में समाहित कर लेता है।

इस भूखंड का कोई भी क्षेत्र चाहे अफ्रीका का हो, चाहे यूरोप का, चाहे एशिया का, चाहे ऑस्ट्रेलिया का, भारत से अब प्रभावित नहीं रहा। इसलिए भारतीय संस्कृति और समाज में यदि मिश्र को, मारीशस को, अपने संस्कारों से ढाला, तो जर्मनी और नार्वे भी उसके प्रभाव से वचे नहीं। जापान और मंचूरिया भारतीय रूप में विकसे। चीन में भारतीय बौद्ध धर्म पनपा, तो ऑस्ट्रेलिया भी भारत के आत्मीय संबंधों में बंधा और इंडोनेशिया के जावा सुमात्रा ऐसे लगे कि मानो वे भारत के अंग हैं। भारत के विकास का यह रूप देखते हुए सहज ही कहा जा सकता है कि भारतीय उपमहाद्वीप अफ्रीका, यूरोप, एशिया तथा आस्ट्रेलिया महाद्वीप के केंद्र में स्थित है तथा अमेरिका भी किसी प्रकार भारत से अलग व दूर नहीं। भारतीय सभ्यता ने मैक्सिको, संयुक्त राज्य अमेरिका, अर्जेंटाइना सभी देशों को अपने संबंधों से संभाला व सफल रहा।

- **सागरों के केंद्र में स्थित भारतीय उपमहाद्वीप - :** प्रकृति ने भारतीय उपमहाद्वीप को विश्व के केंद्र में हिंद महासागर की गोद में उभारने का सुंदरतम प्रयास किया है। हिंद महासागर इसकी सुरक्षा करता है, वर्षा देता है,

संसाधन देता है, साथ ही विदेशों से संबंध स्थापित कराता है। इसके साथ ही उसके चारों ओर स्थलीय संरचनाएं इसे घेरकर सुरक्षित करती हैं

आंध्र महासागर, दक्षिण से लेकर उत्तर तक अफ्रीका व यूरोप से बंधा हुआ इस उपमहाद्वीप को पश्चिम की ओर से घेरता है तो प्रशांत महासागर एशिया के पूर्वी तट पर उत्तर से लेकर दक्षिण तक भारतीय उपमहाद्वीप को अपने संरक्षण में लेता है। उत्तर में आर्कटिक महासागर है तो दक्षिण में अंटार्कटिक, इन सभी सागरों के बीच सुरक्षित हिंद महासागर में भारतीय उपमहाद्वीप विराजमान है भारतीय उपमहाद्वीप की भौगोलिक व प्राकृतिक संरचना देखने पर ऐसा लगता है जैसे प्रकृति अपनी सुंदरता कृति भारतीय उपमहाद्वीप को सभी प्रकार से सुरक्षित रखना चाहती है। यह उपमहाद्वीप महासागरों के केंद्र में विद्यमान है।

भारतीय उपमहाद्वीप इस स्थिति का भरपूर लाभ उठाने के लिए सक्षम है। भारत का समुद्र तट व्यापारिक दृष्टिकोण से संपन्न तट है। समुद्र भारत को व्यापारिक दृष्टि से समर्थ बनाता है तो योद्धिक दृष्टि से सुरक्षा प्रदान करता है और उसे समर्थ बनाता है। योद्धिक दृष्टि से भारत का समुद्र भारत को बाहरी सामर्थ्य प्राप्त करने को खुले द्वार अर्पित करता है, वह पूर्व व पश्चिम दोनों ही दिशाओं के देशों से सहायता ले सकता है। " शांति के समय राजनयिक संबंध सुदृढ़ करने के लिए विदेशों में अच्छी पहुंच बना सकता है वह अपने प्रभाव में इंडोनेशिया, मलेशिया, ऑस्ट्रेलिया, ब्रह्मा, जापान, श्रीलंका, मेडागास्कर, पूर्वी अफ्रीका आदि देशों को सुगमता से ले सकता है। विश्व की महानतम शक्ति अमेरिका के पास इस स्थिति का अभाव है। वह अपने अतिरिक्त अन्य राष्ट्रों को अधिक प्रभावित नहीं कर सकता जबकि शक्तिशाली होने पर समीपवर्ती राष्ट्र उसके शत्रु बन सकते हैं। यदि कनाडा, चीन की तरह अमेरिका से अधिक शक्तिशाली हो व अमेरिका पर आक्रमण का अवसर आवे तो अमेरिका की स्थिति दयनीय बन सकती है।"[4]

इस सामुद्रिक स्थिति और समुद्र के बीच केंद्रीय स्थिति के कारण ब्रिटेन विश्व का सबसे बड़ा शक्तिशाली साम्राज्य बन गया था, जिसके साम्राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था। भारतीय उपमहाद्वीप को यह सागरों के बीच स्थिति किसी समझौते या राजनीति का परिणाम नहीं है, यह तो प्रकृति का वरदान है, इसका उसे सदुपयोग करना चाहिए।

- **जल मार्गों एवं वायु मार्गों के केंद्र में स्थिति भारतीय उपमहाद्वीप-:** विश्व में कोई भी देश अपनी सीमा में बैठा हुआ विश्व के लोगों से संबंध नहीं रख सकता, उसे बाहर निकलना पड़ता है व विश्व के लोगों को अपने यहां बुलाना पड़ता है। इसके लिए आवागमन के मार्ग चाहिए, जो देश इन मार्गों का केंद्र बन जाता है वह विश्व का सरताज बन सकता है। सौभाग्य है कि भारत अपनी केंद्रीय स्थिति के कारण विश्व के जलमार्गों व वायुमार्गों का केंद्र बना हुआ है।

जलमार्ग- भारत के प्रधान सामुद्रिक मार्ग " 12 प्रधान बंदरगाहों से आरंभ होते हैं।"[5] भारत हिंद महासागर के सिरे पर स्थित है। यहां से पूर्व व दक्षिण-पूर्व को सामुद्रिक मार्ग चीन, जापान, इंडोनेशिया, मलेशिया व ऑस्ट्रेलिया को दक्षिण और पश्चिम में संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप तथा अफ्रीका को और दक्षिण में श्रीलंका को जाते हैं। इस प्रकार दक्षिण पूर्व व पूर्वी एशिया के विकासशील एवं कृषि प्रधान देशों से मिलाने के लिए सामुद्रिक मार्ग एक कड़ी का काम करता है। आज विश्व एक इकाई ह।, सभी देश एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। " अंतरराष्ट्रीय व्यापार सामुद्रिक परिवहन पर निर्भर है क्योंकि सभी महासागर एक दूसरे से जुड़कर सुपर हाई का निर्माण करते हैं। भारत के लिए सामुद्रिक परिवहन इसलिए अधिक महत्वपूर्ण है की कुल व्यापार का 93% भाग सामुद्रिक परिवहन द्वारा ही किया जाता है। विकासशील देशों में भारत का जहाजी बेड़ा विशालतम है व संपूर्ण विश्व में इसका 17 स्थान है।" [6] स्वेज नहर बन जाने से भारत के पश्चिमी देशों से संबंध और भी अधिक सहज हो गए मलक्का जलडमरूमध्य से जापान व चीन के लिए संबंध में सरलता बनी। किसी परिस्थिति का लाभ लेते हुए भारत सामुद्रिक मार्गों के केंद्र में आ गया।

वायु मार्ग- वर्तमान युग में वायुमार्ग का महत्व बढ़ता जा रहा है। भारत इस क्षेत्र में विकासशील देशों में महत्वपूर्ण है। एयर इंडिया व दूसरे देशों की विमान कंपनियों द्वारा संचालित वायु मार्ग निम्नलिखित हैं-

1 - मुंबई- काहिरा- रोम- जिनेवा-पेरिस-लंदन।

2- कोलकाता- रंगून-सिंगापुर-जकार्ता-सिडनी-वेलिंगटन।

3- दिल्ली-अमृतसर-काबुल-मास्को।

4- दिल्ली-मुंबई-केपटाउन-अदन।

5- मुंबई-काहिरा-रोम-पैरिस-लंदन-न्यूयॉर्क-शिकागो-वैंकूवर (कनाडा)।

6- दिल्ली-बैंकांक-हांगकांग- टोकियो।

7- दिल्ली-मॉस्को-स्टॉकहोम-लन्दन।

8- मुंबई-काहिरा-पेरिस-लंदन-मेड्रिड-डाकर-रियो-डी-जेनेरो-ब्यूनिस आयर्स।

9- कोलकाता-पर्थ-सिडनी।

10- चेन्नई-सिंगापुर-जकार्ता-पर्थ।

• **संसाधनों के केंद्र में स्थित भारतीय उपमहाद्वीप-** भारतीय उपमहाद्वीप विश्व मेंअति विशिष्ट स्थिति पर बसा हुआ है। खाद्यान्न हो, व्यापारिक फसलें हों, शक्ति संसाधन हो, अन्य खनिज हों, या मानव संसाधन, सभी दृश्यों से भारतीय उपमहाद्वीप समृद्ध एवं सशक्त है।

1. खाद्यान्न- खाद्यान्न में गेहूं और चावल दो मुख्य उपजें हैं। एशिया कृषि की आदि स्थली है और गेहूं तथा चावल दोनों ही यहां अतीत काल से उत्पादित होते हैं। विश्व का लगभग 40% गेहूं एशिया में पैदा किया जाता है। प्रमुख उत्पादक देश साइबेरिया, चीन, भारत, तुर्की पाकिस्तान व ईरान हैं। इसके अतिरिक्त अफगानिस्तान, इराक व जापान में भी गेहूं पैदा होता है। " भारत एशिया का तीसरा बड़ा उत्पादक देश है भविष्य का लगभग 12.4 प्रतिशत गेहूं उत्पादित करता है।"[7]

भारत बांग्लादेश व पाकिस्तान का गेहूं तो आसानी से प्राप्त कर ही सकता है बल्कि ईरान, तुर्की, अफगानिस्तान और इराक का गेहूं सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। एशिया में विश्व का लगभग 93 प्रतिशत चावल उत्पन्न होता है। चावल उत्पादन के लिए चीन, इंडोनेशिया बांग्लादेश, जापान, भारत और फिलीपीन्स मुख्य देश हैं। चीन में विश्व का 31.3 प्रतिशत भारत में विश्व का 19 प्रतिशत, इंडोनेशिया में 9.1 प्रतिशत, बांग्लादेश में विश्व का 6.70 प्रतिशत, म्यांमार में 4.20 प्रतिशत, चावल उत्पादित होता है। पाकिस्तान विश्व का 1.30 प्रतिशत, फिलिपींस 2.50 प्रतिशत, पोलैंड 4.60 प्रतिशत चावल उत्पन्न करते हैं।"[8] भारतीय उपमहाद्वीप के लिए इंडोनेशिया, वियतनाम, थाईलैंड, म्यांमार, फिलिपींस आदि से चावल प्राप्त करना सरल है।

2. **व्यापारिक फसलें-** व्यापारिक फसलों में भी भारतीय उपमहाद्वीप अति समृद्ध है इसके अतिरिक्त उपमहाद्वीप के चारों तरफ के देश व्यापारिक फसलों के उत्पादन में समृद्ध हैं चाय, कपास, गन्ना, रबड़ यहां की प्रमुख व्यापारिक फसलें है,।

- **चाय-** चाय एशिया महाद्वीप का मूल पौधा है।"भारत सर्वाधिक चाय उत्पन्न करता रहा अब दूसरे स्थान पर है। सन 2008 में चीन ने 1,275,384 टन, भारत ने 851080 टन,श्रीलंका ने 318470 टन, तुर्की ने 198046 टन, हिंदेशिया ने 150851 टन, वियतनाम ने 174900 टन, जापान ने 94100 टन , ईरान ने 59000 टन चाय उत्पादित की।"[9]

भारतीय उपमहाद्वीप के लिए श्रीलंका,तुर्की, वियतनाम, हिंदेशिया, ईरान व म्यांमार से चाय उपलब्ध करना स्वाभाविक व सरल है।

- **कपास-** कपास भी भारतीय उपमहाद्वीप में 1000 वर्ष पूर्व से उत्पादित होने वाला पौधा है। प्रमुख रूप से चीन, भारत, पाकिस्तान, टर्की, कपास के उत्पादक देश हैं। विश्व की 35 प्रतिशत कपास एशिया में पैदा होती है। " चीन विश्व का 28.60 प्रतिशत , भारत 12 प्रतिशत, पाकिस्तान 8.50 प्रतिशत, उज़्बेकिस्तान 4.4 प्रतिशत, तुर्की 4.10 प्रतिशत, सीरिया 1.30 प्रतिशत उत्पादन करता है।"[10] भारतीय उपमहाद्वीप अपना कपास तो रखता ही है। इसके अलावा वह तुर्की सीरिया आदि का कपास भी सरलता से प्राप्त कर सकता है।
- **गन्ना-** गन्ना भी भारतीय उपमहाद्वीप का अति प्राचीन उत्पादन है। एशिया में विश्व का सबसे अधिक गन्ना पैदा होता है। भारत चीन थाईलैंड पाकिस्तान फिलीपींस इंडोनेशिया बांग्लादेश व ताइवान मुख्य उत्पादक देश हैं। सन 2005 में भारत ने विश्व का 19.90 प्रतिशत, चीन में 4.6 प्रतिशत, थाईलैंड में 4.20 प्रतिशत, पाकिस्तान में 4 प्रतिशत, फिलीपींस में 2.60 प्रतिशत और इंडोनेशिया ने 2.20 प्रतिशत गन्ने का उत्पादन किया।"[11]

भारतीय उपमहाद्वीप थाईलैंड, फिलिपींस, इंडोनेशिया, का गन्ना अति सरलता से प्राप्त कर सकता है।

- **रबड़-** रबड़ आज के युग में अति महत्वपूर्ण है सन 2005 में थाईलैंड ने विश्व की 33 प्रतिशत, इंडोनेशिया ने 23.30 प्रतिशत, मलेशिया ने 13 प्रतिशत, भारत ने 8.60 प्रतिशत, चीन ने 6.80 प्रतिशत, वियतनाम ने 5 प्रतिशत, फिलीपींस में 1 प्रतिशत रबड़ का उत्पादन किया। यदि चीन को छोड़ भी दिया जाए तो भी भारतीय उपमहाद्वीप रबड़ के उत्पादन करने वाला बड़ा क्षेत्र बन जाता है।"[12]

2- खनिज व ऊर्जा संसाधन खनिज संसाधनों का ऊर्जा स्रोत की दृष्टि से भारतीय उपमहाद्वीप विश्व के किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं रहता । एशिया विश्व का 90 प्रतिशत अभ्रक, 70 प्रतिशत टिन, 40 प्रतिशत टंगस्टन, 43 प्रतिशत खनिज तेल, 27 प्रतिशत कोयला, 28 प्रतिशत सुरमा, 12 प्रतिशत जस्ता, 10 प्रतिशत शीशा, 7 प्रतिशत तांबा, 18 प्रतिशत नमक, 64 प्रतिशत लोहा, 6 प्रतिशत बॉक्साइट, 5 प्रतिशत सोना, 6 प्रतिशत चांदी का उत्पादन करने लगा है।"[13] खनिज बा ऊर्जा स्रोतों में मुख्य रूप से लोहा, कोयला, पेट्रोल व गैस का महत्व है। लोहा आधुनिक युग का आधार है। एशिया में साइबेरिया, चीन, भारत, कजाकिस्तान, ईरान, उत्तरी कोरिया, फिलिपींस तथा मलेशिया उत्पादन में अग्रणी है। साइबेरिया ने विश्व में 27.20 प्रतिशत, चीन ने 24.30 प्रतिशत, भारत ने 9.2 प्रतिशत, कजाकिस्तान ने 1.3 प्रतिशत, ईरान ने 1.1 प्रतिशत, उत्तरी कोरिया ने 5 प्रतिशत, तुर्की ने 2 प्रतिशत उत्पादन सन 2005 में किया। भारतीय उपमहाद्वीप किस संसाधन का बड़ी सरलता के साथ उपयोग कर सकता है।

कोयला- शक्ति के साधनों में सर्वाधिक प्रयुक्त व सर्वाधिक सुलभ साधन कोयला है। " सन 2005 में चीन ने विश्व का 34.3 प्रतिशत, साइबेरिया ने 15.2 प्रतिशत, भारत ने 7.4 प्रतिशत, उत्तरी कोरिया ने 1. 5 प्रतिशत, तुर्की ने 0.9 प्रतिशत, जापान ने 0.4 प्रतिशत उत्पादन किया। भारतीय उपमहाद्वीप कोयले के सुरक्षित भंडार का सरलता से उपयोग कर सकता है।।"[14]

तेल- वर्तमान युग में सर्वाधिक महत्व का संसाधन तेल है। इसके लिए विश्व पागल बना हुआ है। सन 2005 में विश्व का 33 प्रतिशत से अधिक तेल एशिया में उत्पादित किया गया। पश्चिमी एशिया के देशों में एशिया के कुल उत्पादन का 90% तेल मिलता है। " सऊदी अरब 13.5 प्रतिशत तथा ईरान 5.3, इराक 3.3 प्रतिशत, कुवैत 3.4 प्रतिशत, और बहरीन , कतर, तुर्की व इजरायल तेल उत्पादन करते हैं। सऊदी अरब सबसे बड़ा तेल उत्पादक देश है। एशिया में अन्य उत्पादक देश हिंदेशिया, चीन, म्यांमार, भारत, मलेशिया व साइबेरिया हैं। सन 2005 में विश्व का 13.5 प्रतिशत सऊदी अरब ने, 5.3 प्रतिशत ईरान ने, 4.6 प्रतिशत चीन ने, 3.3 प्रतिशत ईराक ने, 3.4 प्रतिशत कुवैत ने, 1.4 प्रतिशत इंडोनेशिया ने, 2.5 प्रतिशत संयुक्त अरब अमीरात ने, 0.5 प्रतिशत ओमान ने तेल का उत्पादन किया।"[15] भारत पूर्व व पश्चिम दोनों ही क्षेत्रों के तेल को सरलता से प्राप्त कर सकता है।

बिजली- जल विद्युत निरंतर प्राप्त होने वाली शक्ति है। विश्व का एक तिहाई अंश एशिया में ही विद्यमान है। चीन व जापान अग्रणी है। परंतु भारत भविष्य का केंद्र है। नदियों से समुद्र से और कोयले से पर्याप्त विद्युत का उत्पादन हो सकता है। जल संसाधन के रूप में भारत के अतिरिक्त दक्षिण पूर्वी एशिया अफ्रीकी देश की सामर्थ को बढ़ाते हैं।

मानव- सर्वाधिक महत्व का संसाधन मनुष्य होता है। जिस पर विश्व की दृष्टि सबसे कम जाती है। पश्चिमी दृष्टि संसाधन परक दृष्टि है, जो समाप्त सरलता से हो जाता है व दुबारा प्राप्त होना कठिन है। परंतु साधक की दृष्टि जो सतत सामर्थ्यवान बन कर उभरती है, ओझल रह जाती है। भारतीय उपमहाद्वीप साधकों का देश है। साधन तो उसके पीछे दौड़ते हैं। भारतीय उपमहाद्वीप में मनुष्य संसाधन का अभाव नहीं है वह इसके पड़ोसी देश इस उपमहाद्वीप के लिए सामर्थ्य उपलब्ध कराने में पीछे नहीं हैं। भारत 121.45 करोड़, पाकिस्तान 18.48 करोड़ और बांग्लादेश 16.44 करोड़, भूटान 21 लाख जनसंख्या रखने वाले देश हैं। यदि इन सभी को जोड़कर यह 156.58 करोड़ हो जाएगी। यहां संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप एक बड़ी जनसंख्या रखने वाला क्षेत्र है। इसी तरह उसके आस-पास के देशों में भी मानव संसाधन सहज ही उपलब्ध है। " इंडोनेशिया में 229.965

मिलियन, फिलीपींस में 91.983 मिलियन, टर्की में 78.816 मिनियन जनसंख्या 2009 में थी।"[16] भारतीय उपमहाद्वीप अपने समीपवर्ती देशों के मानव संसाधन की संख्या, शक्ति कौशल, समर्पण, सहयोग और विश्व निर्माण की दृष्टि से सर्वाधिक सरल और सहज ढंग से करने में समर्थ है। यह न तो विश्व में किसी देश को, न किसी क्षेत्र को उपलब्ध है, न वह कर सकता है।

ब- भारतीय उपमहाद्वीप विश्व का लघु रूप है-:

आज के विचारकों की दृष्टि में जो भारतीय उपमहाद्वीप है वह स्वाभाविक एक इकाई है, पूर्ण गुम्फित व पूर्ण एकात्मक संचरित इकाई है। यहां अनेक नहीं, एक का ही चैतन्य है। भारत आदि देश हैं और विश्व की सभ्यता यही जन्मी । " आदि भाषा की जन्म स्थली होने का गौरव भी भारत को प्राप्त है वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ है। और वैदिक भाषा की मूल भाषा है।"[17]

विश्व का ज्ञान भारत की कोख से ही जन्मा है। " डी0 ओ0 ब्राउन महोदय 20 फरवरी 1844 के डेली ट्रिब्यून पत्र में स्वीकार करते हैं की ' यदि हम पक्षपात रहित होकर भली-भांति परीक्षा करें तो हम को स्वीकार करना पड़ेगा कि हिंदू ही सारे संसार के साहित्य, धर्म और सभ्यता के जन्मदाता हैं'।"[18] कोन्ट जार्न्स लिखते हैं " आर्यवर्त केवल हिंदू धर्म का ही घर नहीं है बरन हुआ संसार की सभ्यता का आदि भंडार है।"[19] भारत जिसे उपमहाद्वीप कहते हैं भौतिक, सामाजिक व सांस्कृतिक दृष्टि से एक विशाल एकात्म अस्तित्व है। जिसका प्रभाव विश्व भर में राजनीतिक सीमाओं को नकार का हुआ रहा है व जिसकी पहचान विश्व के जीवन में आज भी देखने को मिलती है।

भारत प्राकृतिक संरचना, सामाजिक व्यवस्था व सांस्कृतिक चेतना को समेटे हुए एक अनुपम अस्तित्व है। यह विश्व की आर सी है विश्व का लघु रूप है।

प्राकृतिक संरचना - प्रकृति के हाथों सृष्टि बंधी है, धरती की संरचना उसी के हाथों हुई । " प्रकृति की तूलिका ने विश्व की समग्रता भारत की सीमाओं में समेट कर रख दी है, विश्व की झांकी भारत की आरसी में देखिए। आकाश को चूमती हिमाद्री की ऊंचाई, पाताल को नापती सागर की गहराई, तप्त तबे सा तपता राजस्थान, हिना से गलता कैलाश, बूंद-बूंद जल के लिए तरसता अरावली व सतत मेघधारा से

नहाता बंगाल, प्राचीनतम चट्टानों पर लोटता सहयाद्री व नवीन चट्टानों पर उभरता सागरमाथा, सौंदर्य का घर कश्मीर और शौर्य की गाथा मेवाड़, ज्ञान का मंदिर बंग, कर्म की धरती अवध क्या नहीं है इस भारत में, विश्व की प्रयोगशाला है।"[20] इसी भाव को व्यक्त करते हुए डा0 अवस्थी लिखते हैं " भारत विश्व का लघु रूप है। विश्व की समग्रता समेटकर यह बैठा है। धरातल की विभिन्न आकृतियां, सागर की विभिन्न स्थितियां, विश्व में पाए जाने वाले पशु पक्षी व वनस्पतियां, सभी प्रकार की जलवायु व जातियां चिंतन व अनुभव से उपजे दर्शन व दृष्टियां, कुछ भी ले लो इस धरती पर मिलेंगी।"[21] वे आगे लिखते हैं कि "विश्व की चेतना व जीवन शैली भी समझने के लिए भारत को जानना और समझना आवश्यक है। विश्व में चल रहे समस्त प्रयासों की प्रयोगशाला भारत की धरती रही है विश्व भारत की दृष्टि से बंधा है, जिसे यह दृष्टि मिली वहां विश्व को समझ गया।"[22] भारत प्राकृतिक संरचना के हाथों विश्व की प्राचीनतम पर्वतमाला सहयाद्री और नवीनतम पर्वत श्रंखला हिमाद्री को अपने वक्षस्थल पर साधे है। विश्व की सबसे ऊंची चोटी सागरमाथा यहां है, तो सामान्य लगने वाला विंध्याचल के पर्वत भी हैं। विश्व की बड़ी से बड़ी कहलाने वाली नदियां सिंधु, गंगा ब्रह्मपुत्र यहां पर बहती है, जो धरती पर दिखाई ना पडने वाली सरस्वती नदी यहां के लोगों के मन में बसी है। सर्वोत्तम सरोवर मानसरोवर यहां के लोगों का पूज्य स्थान है। विश्व का महानतम मैदान सिंधु गंगा ब्रह्मपुत्र विश्व को भोजन देने में समर्थ है तो पठार दक्कन का कहीं भी पीछे नहीं। घाटियां हैं, चोटिया हैं और हिना से ढके ग्लेशियर भी हैं। रेगिस्तान है तो सतत नहाते चेरापूंजी से स्थल भी हैं ।

भारत की वह देश है जिसे उपमहाद्वीप कहा है, जो समुद्र का स्थल दोनों की ही भुजाओं से बंधा बैठा है। स्वीटजरलैंड समुद्र की कल्पना भी नहीं करता रूस समुद्र के लिए बेचैन है बस समुद्री शक्तियां स्थलीय शक्ति बनने को व्यग्र हैं। भारत समुद्री शक्ति है स्थलीय शक्ति भी। भारत के समुद्र का व समुद्री ही क्यों महासागर का नाम हिंद महासागर है। विश्व में अकेला यह उदाहरण है। यहां की खाड़ी है जलडमरूमध्य है। प्रवाल चट्टानें हैं। कटाने हैं। धरातल को नहलाते हुऐ बादलों के अच्छादन भी। इस धरातलीय संरचना पर जलवायु की विश्व भर में फैली सभी स्थितियां विद्यमान हैं। टुंड्रा का रूप देखना है तो हिमालय पर पहुंचो, सहारा को

देखना है तो राजस्थान जाओ । कांगो को खोजना है तो चेरापूंजी चलो। उष्णकटिबंध से लेकर शीतोष्ण कटिबंध व शीतकटिबंध तक की जलवायु भारत पर मिल जाती है। जिस कारण यह क्षेत्र हर दृष्टि से जैव विविधता में भी कहीं आगे है।

सामाजिक संरचना- विश्व भर में लोगों का निवास है और अनेकों देश अपने अपने ढंग से जीवन के पथ पर चलते हैं। जीवन जीने के दो रास्ते हैं- अपने लिए, अपने समाज व अपने देश के लिए अन्य लोगों को , अन्य समाज को, अन्य देशों को तथा प्रकृति को शोषित और ध्वस्त करते हुए सब कुछ बटोर लेना, यह भोग का रास्ता है। विश्व में छाने वाली शक्तियां ब्रिटेन रही हो या आज अमेरिका, इसी रास्ते पर चलने वाली हैं, उनके लिए समग्र विश्व का एकात्म कल्याण कोई अर्थ नहीं रखता , वे अपनी शक्ति को सबसे बड़ा बनाकर विश्व पर छा जाना चाहती हैं। दूसरा रास्ता है अपने विकास के साथ साथ औरों के भी विकास को साथ लेकर चलने का विश्व भर को श्रेष्ठ(आर्य) बनाने का, समग्र सृष्टि का कल्याण करने का यह सोच भारत का है यह भारतीय सोच है भारतीय संस्कृति की सोच है।

इसी मानवीय सोच को लेकर भारत ने विश्व भर में अपने ज्ञान को बिखेरा है व अपनी सांस्कृतिक दृष्टि को विश्व के देशों में पहुंचाया है। कहीं भारत ने सेना लेकर आक्रमण नहीं किया। किसी देश के गुलाम नहीं बनाया। मनुष्यता के संस्कार में सभी को अपने साथ समेटा है, परिणाम यह हुआ कि चीन, जापान, नेपाल, इंडोनेशिया आदि देशों में बौद्ध मत, जिसे अब धर्म कहते हैं, का प्रसार हुआ। विश्व के यूरोपीय देश जर्मनी, डेनमार्क, कनाडा, अमेरिका से लेकर मैक्सिको, अर्जेंटीना, तक और इराक, ईरान, अरब आदि देशों में हिंदू दर्शन वा हिंदू शैली का विस्तार हुआ। आचार्य श्री राम शर्मा की पुस्तक 'भारतीय धर्म-मानव धर्म' के आधार पर विश्व के प्रत्येक महाद्वीप में हिंदू धर्म का प्रकाश फैला । पूरा विश्व भारतीय संस्कृति के प्रकाश में आया। "प्राचीन काल में समस्त विश्व इसी मार्ग पर चलता था, भारत की धार्मिकता, अध्यात्मिकता एवं संस्कृति वस्तुतः विश्व संस्कृति है- मनुष्य मात्र का दर्शन एवं दृष्टिकोण इसी केंद्र पर केंद्रित था" [23] भारत का समस्त विश्व का अपने दायित्व को लेकर फैला था। " भारत की सीमाएं लगभग विश्व सीमा जितनी थी क्योंकि यहां के तत्वदर्शी दिग्मनीषी किसी छोटे क्षेत्र या वर्ग का हित साधन की

बात न सोचकर समस्त विश्व की समृद्धि एवं प्रगति को ध्यान में रखकर अपने चिंतन एवं कर्तव्य का निर्धारण करते थे।" [24] वसुधैव कुटुंबकम यहां का लक्ष्य रहा जो आज तक भारत में पल रहा है। भारत ने अपनी धरती पर विश्व की अनेक जातियों को बसाया है, अपना बनाया है। शक आए, हुण आए, मंगोल आये, व भारत की जीवन गंगा में इसी तरह मिल गए जैसे गंगा में यमुना सरस्वती मिलती हैं। भारत ने पारसियों, यहूदियों को अपने संरक्षण में बिठाया, जिन्हें विश्व भर में कहीं शरण नहीं मिलती थी। भारतीयों ने इस्लाम को सम्मान के साथ अपनी धरती पर फैलने का अवसर दिया।

भारतीयों ने ईसाइयों को कभी घृणा से नहीं देखा, वे चाहे डच रहे हो, चाहे पुर्तगाली हो, अंग्रेज हो या अन्य किसी देश के, उन्हें अपनी धरती पर लिया है भारतीयों की बड़ी संख्या ईसाई बनती चली गई है। आज भारत में विराट लोग हैं जिसमें धरती के साथ पशु-पक्षी पेड़-पौधे मनुष्य और काल सभी कुछ समाहित है। अपने में मनुष्य के जिस रूप को समाहित रखता है वह समाज कहलाता है। यह समान संघर्ष का ही नहीं सहकार का है। भारत इसलिए एक साथ हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, सिख सभी रहते है, - इंडिया 1986 के आधार पर " 1971 में हिंदुओं की संख्या 82.82 प्रतिशत मुस्लिमों की संख्या 11.20 प्रतिशत ईसाइयों की संख्या 2.59 प्रतिशत सिक्खों की संख्या 1.89 प्रतिशत बौद्धों की संख्या 0.71 प्रतिशत जैनियों की संख्या 0.40 प्रतिशत थी"[25] जो 2001 की जनगणना के अनुसार हिंदुओं की संख्या 80.05 प्रतिशत, मुस्लिमों की संख्या 13.4 प्रतिशत ईसाइयों की संख्या 2.03 प्रतिशत सिक्कों की संख्या 1.09 प्रतिशत बौद्धों की संख्या 0.8 प्रतिशत जैनियों की संख्या 0.04 प्रतिशत और अन्य की 0.6 प्रतिशत हो गई। इस संरचना को देखते हुए स्पष्ट है कि भारत में हिंदुओं की जनसंख्या घटती गई और मुस्लिमों की जनसंख्या ईसाइयों की जनसंख्या बढ़ती गई है। भारतीय उपमहाद्वीप में पाकिस्तान व बांग्लादेश दोनों की जनसंख्या संरचना को जोड़ने पर मुस्लिमों की जनसंख्या अरब क्षेत्र के मुस्लिमों से कहीं ज्यादा हो जाती है। पूरा भारत उपासना पद्धति के आधार पर पूरे विश्व की उपासना पद्धतियों को, पंथ्यों को, मतों को, मजहब को अपने में समेटे हुए हैं। यह विश्व का लघु रूप है। यहां कोई मजहब या कोई रिलीजियस बढ़ता हुआ चला जाता है।

चीन के बाद भारत विश्व में सबसे बड़ी जनसंख्या रखने वाला देश है। यहां प्रति वर्ग किलोमीटर घनत्व भी कहीं अधिक है। लगता है कि विश्व का एक बड़ा स्वरूप भारत में विद्यमान है। यहां पुरुष व नारी दोनों समान रूप से विकास कर रहे हैं। उसी का परिणाम है कि आज भारत में महिलाएं उच्च पद पर आसीन हैं। चाहे वह राजनीति हो अर्थ क्षेत्र हो सभी जगह महिलाएं आगे हैं। प्रतिभा पाटिल, ममता बनर्जी, शीला दीक्षित, जयललिता आदि महिलाएं इसी कड़ी का अंग है,। प्रशासनिक सेवाओं में महिलाओं का अच्छा प्रभुत्व है। कहा जाता है कि भारत धनी देश है। जहां निर्धन निवास करते हैं परंतु आज विश्व में सबसे बड़े धनाढ्य लोगों में मुकेश अंबानी व अनिल मित्तल तक कितनों तक का ही नाम सम्मिलित है। यह आवश्यक है कि दुनिया में छाई हुई निर्धनता के समान भारत में निर्धनता जमी हुई है।

इस दृष्टि से विश्व की झांकी भारत के स्वरूप में झांकती है। शिक्षा के क्षेत्र में भी महिला व पुरुष दोनों बराबर आगे बढ़ रहे हैं। केरल साक्षरता में यहां सबसे आगे है, वहीं भारत का कोई भी प्रदेश 60 प्रतिशत से कम साक्षर नहीं है। साक्षरता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। मानव कौशल मानव विकास की दृष्टि से भारत आज अमेरिका में कनाडा में इंग्लैंड में जर्मनी में विश्व के अनेक देशों में छाया हुआ है। आज भारतीय रक्त अमेरिका को समृद्ध बना रहा है। कनाडा की तरक्की कर रहा है। इंग्लैंड को आगे बढ़ा रहा है। जर्मनी को संपन्न कर रहा है व इराक हो, ईरान हो, अफगान हो या अरब सर्वत्र अपने प्रयासों से सुख व संपन्नता बिखेर रहा है। सही अर्थों में भारत उपमहाद्वीप की सामर्थ विश्व की सामर्थ्य है । विश्व के लिए सामर्थ्य है।

सांस्कृतिक संरचना- फ्रांस की क्रांति में उभरते हुएमूल्य स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व सामने आए हैं और भारत मे ' सर्वमिदंम खलुब्रह्म' 'अहम् ब्रह्मास्मि' से लेकर 'आत्मवत सर्वभूतेषु ', 'सर्वे भवंतु सुखिनः' व 'वसुधैव कुटुंबकम' के भाव निकले हैं। इन सांस्कृतिक मूल्यों को ना विदेश छोड़ता है ना भारत। भारत में समग्र सृष्टि का स्वभाविक जीवन सांस्कृतिक धारा में विद्यमान है। भारत में विदेशों के लोग आए, अपने साथ विदेश के कार्य व्यापार भी लाऐ, परंतु कार्य व्यापारों में मूल भावना एक ही है। भारत में अंग्रेज आए न्यू ईयर डे मना भारत में नव वर्ष का उत्सव अतीत से चला आया। नववर्ष की तिथि अवश्य बदली परंतु नववर्ष का मूल भाव नहीं

बदला। भारत बड़ी धूमधाम से विदेशी सभ्यता में ढले भारत के लोग वैलेंटाइन डे मनाते हैं। यह प्रेम महोत्सव है भारत से कहीं व्यापक, कहीं श्रेष्ठ मिलन का उत्सव प्रेम का महोत्सव 'होली' पर मनाता है। यह प्रत्येक के मिलन का उत्सव है प्रेम का प्रदर्शन है वह आनंद का स्रोत है। विदेशों में पतंगों का उड़ाना देखकर भारत का वसंतोत्सव सामने थिरक जाता है। जापान में अच्छी-अच्छी पतंगे आकाश में उड़ती है। भारत की पतंगों में झांकती मिलती है। कोई भी खेल या उत्सव अब विदेश का नहीं रह गया। ईद, मुहर्रम, बारहवफात, बड़ा दिन, गुड फ्राइडे 25 दिसंबर सभी उत्सव धूम-धड़ाके के साथ भारत में मनाए जाते हैं। यह इंग्लैंड में खेले जाने वाला क्रिकेट भारत में गिल्ली डंडा के रूप में दिखाई पड़ता है और जो पागलपन उतावलापन क्रिकेट के लिए भारत में मिलता है वह शायद किसी भी देश में मिलता हो।

भारत में प्रत्येक कार्यक्रम को प्रारंभ करने के लिए प्रभु का स्मरण आवश्यक बनता है का ठिकाना नहीं बनता कि सेकुलर कहे जाने वाले अमेरिका वे इंग्लैंड जैसे देशों में शपथ लेने के लिए बाइबल या ईसा मसीह की आवश्यकता पड़ती है भारत में तो भारत का राष्ट्रपति ही मुसलमान हो सकता है। भारत का रक्षा मंत्री इसाई हो सकता है, परंतु अमेरिका व इंग्लैंड में अरब व पाकिस्तान का हिंदू नही,। भारत विश्व की संस्कृति चेतना ओं को सहज रूप में अपने में समेटता है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने कुछ अंग्रेजी को जो भारत को दास बनाने का हथियार थी और मैकाले कहते थे कि अंग्रेजी से हर भारतीय को अंग्रेज बनाया जा सकता है, आज भारत के घर-घर में अंग्रेजी बैठ गई है। यहां रसखान व रहीम कृष्ण के गीत गाते हैं और न जाने कितने मोहम्मद साहब के विचारों के गाने वाले मिलते हैं। केवल विचार नहीं कर्म भी समुदायों के व्यवहार भी ढलते दिखाई पड़ते हैं। विश्व के महापुरुष लिंकन हों, माओ हों, शेक्सपियर हो, भारत में बड़ी लगन के साथ स्मरण किए जाते हैं। लोकतंत्र के लिए राम को नहीं लिंकन को याद किया जाता है। समाजवाद के लिए कृष्ण को राम को नहीं लेनिन को याद किया जाता है। पूरा भारत विदेशी विचार को बस सो भाविक घर बनता जा रहा है। विदेशी महापुरुषों के साथ ही विदेशी भूसा ढंग विदेशी जीवन पद्धति बैठी हुई सर्वत्र मिल जाती है। भारत में जीवन साधना है तो विदेश में जीवन संघर्ष है। भारत में देने का करने का अर्थात धर्म का रास्ता है तो विदेशों में लेने का दबोचने व अधिकार का रास्ता है। भारत में

पोषण का पालने का पथ है तो विदेश में शोषण का उच्चाटन का रास्ता है। विदेश कहता है कि माइट इज राइट , तो भारत स्वीकारता है जो जन्मा है शो खाएगा, सबै भूमि गोपाल की। आज भारत व विदेश दोनों ही के सोच व आचरण चल रहे हैं। सांस्कृतिक चिंतन के आधार पर भारत विश्व की इकाई बन गया है। भारत में ब्रिटेन की भाषाओं का जमघट है ही, वेशभूषा व व्यवहार का भी जमा हो देखने को मिल जाता है। अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार का केंद्र बन गया है हमारा भारत देश।

स- भारतीय उपमहाद्वीप विश्व जीवन का आधार और आदर्श है :-

भारतीय उपमहाद्वीप मनुष्य की आदि स्थली है इसलिए कॉल संचरण का पूरा विवरण भारत में मिलता है। जैसे ही पूजा पर बोले जाने वाला संकल्प कानों में गूंजता है, तो तत्काल काल का सनातन प्रवाह समझ में आ जाता है। " ब्रह्मा के 1 दिन को कल्प अथवा सृष्टि समय कहते हैं। यह कल्प 14 मन्वंतराेंं अथवा एक सहस्त्र चर्तुयुगियों का होता है। वैवस्वत मनु की 27 चर्तुयुगी बीत की है। 28वीं में भी(कृत, त्रेता, द्वापर) 3 युग बीत चुके हैं। कलयुग चल रहा है। भारत में काल का पूरा लेखा विद्यमान है।"[26] समग्र काल का लेखा केवल भारत में ही विद्यमान है, इसकी प्राचीनता का ही परिणाम है। यह आदि देश तो है ही, आदि भाषा की जन्म स्थली भी है। वेद विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ है और वैदिक भाषा विश्व की मूल भाषा है। " इसी भाषा से चीनी ,जापानी, चीनी भाषा का शब्द ' तान' 'स्थान' का ही रूप है।चीनी भाषा का धोम शब्द होम का ही रूप है। जापानी भाषा का किनका हिंदी भाषा का कनक ही रूप है। अंग्रेजी भाषा के शब्द मदर, ब्रदर, डॉटर हिंदी भाषा के मातर, भ्रातर , दुहितर का ही रूप हैं। अरबी भाषा का इंद काल संस्कृत का अंत काल है। सभ्यता का प्रारम्भ इसी भारत की धरती पर होता है।"[27] भारत विश्व का स्वरूप है। समग्र संसार इस शक्ति के संचरण क्षेत्र में बैठा है। ऐसी इकाई जिसके उत्थान रतन और विश्व का उत्थान पतन निर्भर है और जिसकी भौतिक काया में विश्व झांकता है, जिसकी मानसिक दृष्टि में संसार बसता है तथा जिसकी कल्याण भावना से संपूर्ण सृष्टि समा जाती है। वह विश्व शक्ति भारत है।

विश्व में अनेक देश हैं अनेक शक्तियां हैं परंतु " वे पूर्णता कि प्रकाश नहीं। विश्व की शक्ति नहीं, विश्व के लिए शक्ति नहीं, विश्व के समग्र जीवन ढंग से

उपजी शक्ति नहीं, विश्व की आधार शक्ति नहीं। ब्रिटेन शक्ति के रूप में विश्व पर छाया तो रहा, परंतु विश्व का बन नहीं सका। ब्रिटेन के उत्कर्ष पर विश्व का उत्कर्ष नहीं हुआ और ना ही ब्रिटेन के बिखरने पर विश्व बिखर गया। विश्व को नचाने वाला अमेरिका विश्व की शक्ति नहीं, विश्व में शक्ति है, अमेरिका की दृष्टि ले चलने वाली शक्ति है। इसके विकास से विश्व का विकास नहीं इसके बढ़ने पर विश्व का स्वरूप नहीं संभलता है।"[28]

भारत का ज्ञान चाहे अध्यात्मिक हो, चाहे साहित्यिक हो, चाहे योद्धिक हो , सांस्कृतिक व सामाजिक हो सभी से विश्व के लिए है। विश्व को संभालने वाला है और इसीलिए भारत ने विश्व भर में अपना ज्ञान व सभ्यता फैलाई है, परंतु कभी विश्व पर दासता नहीं लादी। यह विश्व को बनाने वाली आधारशिला है। भारत विश्व की कुंजी है। " विश्व को देखना और समझना है तो भारत से सरलता से समझा जा सकता है। व्यक्ति, परिवार और समाज की इकाइयां भारत में पहले बनी ही नहीं दे अपनी समग्रता में बिकसी है। उनका विकास क्रम और सफल संचरण विश्व के देशों को दिशा देता है। उसी का अनुसरण प्रत्येक देश में किसी न किसी रूप में होता दिखाई पड़ता है। रामराज्य से बढ़कर कहीं लोकतंत्र का सुंदर चित्र नहीं। डेमोक्रेसी तो केवल सत्ता तंत्र बनकर रह गई है। लोकतंत्र की उसमें गंद पैठ नहीं पाई । अद्वैतवाद और एकात्म बाद से बढ़कर भला और कौन सा साम्यवाद यह समाजवाद हो सकता है।"[29]

सही अर्थों में विश्व की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तस्वीर समझनी है तो भारत को पहले समझना होगा। भारत से विश्व को दृष्टि मिली है। भारत का ही प्रकाश विश्व पर फैला है।

- **भारत विश्व की प्रयोगशाला है**

विश्व विकास के लिए व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व सृष्टि को कैसे संभाला जाए इसकी एक सुचारू व्यवस्था होगी। इसके लिए भारत से बढ़कर कोई दूसरी स्थली नहीं दिखाई दी, जहां इस व्यवस्था को विकसित किया जाए। सामान्य प्राणियों की तरह मनुष्य भी प्राणी है। परंतु मनुष्य को सामान्य प्राणी से ऊपर उठकर व्यक्ति कैसे बनाया जाए, व्यक्ति को कैसे घर के घरौंदे में बांधा जाए, घर से बढ़कर समाज के संबंधों को साधा जाए, समाज को कैसे राष्ट्र का रूप दिया जाए व कैसे विश्व का

सोच राष्ट्र में पले विश्व को संभालते हुए सृष्टि पूरे पन में निखरे, इस हेतु लगता है परमात्मा ने भारत को चुना। वह राम रूप में आए व धर्म के समग्र ब्याप को, व्यवस्था के समग्र स्वरूप को, साधना के समग्र विस्तार को, संबंधों के समस्त फैलाव को,अपने चिंतन व आचरण में उतार कर दिखाया। इसलिए कहा गया ' रामों विग्रहवान धर्मा:" तुलसी ने रामचरितमानस लिखी व इसी समग्रता का सजीव चित्रण किया है। मानस आचरण का महाकाव्य है। यह आचरण केवल भारत के लिए ही नहीं अपितु यह विश्व भर के लिए अनुकरणीय है। भारत की प्रयोगशाला मैं यहां जीवन लक्ष्य, यह जीवन पथ व यह जीवन साधना मंज कर सामने आई है। इस पर चलकर ही रामराज्य आता है, जो बापू का लक्ष्य रहा। यदि टुंड्रा में विश्व के लिए जीवन का प्रयोग होता तो वह बर्फीले क्षेत्र के प्रयोग के कारण रेगिस्तानी और गर्म क्षेत्र के लिए उपयुक्त ना होता। भारत ही वह धरती है, जहां सब प्रकार का धरातल, सब प्रकार की जलवायु, सब प्रकार की वनस्पति, पशु पक्षी, व्यवस्था व स्थितियां विद्यमान है। इसलिए यहां पर सोच समझकर विकसित की गई जीवन पद्धति, विश्व के लिए कल्याणकारी है। 'सर्वे भवंतु सुखिना:' आत्मवत् सर्वभूतेषु' 'इदमनमं' जैसे सोच विश्व को संभालने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है।

- **भारतीय उपमहाद्वीप विश्व जीवन का आदर्श है-:**

भारत का समाज अपने संबंधों और संस्कारों के कारण विश्व के लिए आदर्श है। आज भी इसी गुणवत्ता के कारण भारत का लोकतंत्र विश्व का सबसे बड़ा व सर्वोत्तम लोकतंत्र है। इसी गुणवत्ता के कारण विश्व में हिंदू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख आदि बड़ी संख्या में रहने के बाद भी एक ही भारतीयता में कुशलता के साथ रहते हैं। उनके भावनात्मक आभार को भारत चीन युद्ध में, पाकिस्तान हिंदुस्तान के युद्ध में वह किसी भी राष्ट्रव्यापी घटना के अवसर पर देखा जा सकता है। सारी क्षुद्र सीमाएं लांग कर भारत एक बन खड़ा होता है।

यदि भारतीय उपमहाद्वीप, जो व्यवहारिक रूप में एक भौगोलिक इकाई भारत देश ही है, एक बन खड़ा हो जाए, तो विश्व के लिए आदर्श बन सामने आएगा। कितनी बड़ी संख्या में हिंदू व मुसलमान, ईसाई व सिक्ख एक साथ एक देश के लिए, उपमहाद्वीप के लिए साधना करते हुए मिलेंगे, यह आदर्श चित्र होगा। भारत की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, व राजनीतिक सभी प्रकार की व्यवस्था विश्व के

लिए अनुकरणीय है। विश्व में भारत उभरता हुआ, विश्व का सिरमौर बनने के लिए आर्थिक क्षेत्र में अग्रणी है। सामाजिक संस्कारों में आज भी भारत विश्व को रास्ता दिखाता है। सांस्कृतिक दृष्टि से व्यक्ति और समाज दोनों को ही श्रेष्ठ बनाने में वह मार्गदर्शक है व सर्वत्र राजनैतिक क्षेत्र में भारत विश्व के लिए एक उदाहरण है। आगे बढ़ने के लिए वह विश्व का आदर्श है।

द- भारतीय उपमहाद्वीप भविष्य की विश्व शक्ति है- :

विश्व में सामर्थ्य के आधार पर शक्तिवान निर्बल देशों की सदैव उपस्थिति रही है। 19वीं व 20वीं सदी में शक्ति का उभरता हुआ चित्र प्रमुख रूप से सामने आया है । ब्रिटेन, जर्मनी, रूस, जापान और अमेरिका शक्तिशाली शक्तियां बन उभरी हैं। यह सभी शक्तियां विश्व में शक्तियां रहीं, क्योंकि-

- इन शक्तियों ने अपने को शक्तिशाली बनाए रखने के लिए सोचा व कार्य किया।
- इन शक्तियों ने अपने को शक्तिशाली बनाने के लिए दूसरे देशों को दबाया, शोषित किया, दास बनाया व ध्वस्त कर डाला।
- इन शक्तियों में विश्व शक्ति बनने का न तो सोच था सामर्थ्य, न दृष्टि थी न ही दर्शन। विश्व कल्याण के लिए न तंत्र था, न साधन थे, इनके पास। अपने लिए ही जीने व मरने का लक्ष्य था। के पास विश्वकल्याण का कभी सोच नहीं था।

विश्व में उभरती हुई शक्तियों का अवसान -

विश्व में सबसे प्रमुख शक्ति ब्रिटेन उभर कर सामने आई। 11 वीं शताब्दी से 16 वीं शताब्दी के मध्य का काल राजनीतिक दृष्टि से इसके लिए महत्व का था। 1750 के पश्चात ब्रिटेन अपनी जल शक्ति, व्यापारिक तथा राजनीतिक कुशलता भौगोलिक सुविधाओं के फलस्वरूप एक के पश्चात एक देश पर उपनिवेशक अधिकार जमाता गया। कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका के अतिरिक्त सामुद्रिक शक्ति एवं सामरिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थल जैसे जिब्राल्टर, स्वेज, सिंगापुर, आदि पर भी नियंत्रण स्थापित किया। मुगल शासन काल में भारत पर अपना नियंत्रण स्थापित करना प्रारंभ किया। जिसके साम्राज्य में सूरज कभी नहीं डूबता था यह समय ब्रिटेन के चरमोत्कर्ष का था।

ब्रिटेन ने अपना विकास राज्य के शक्ति स्वरूप को विस्तृत करने के लिए किया था, उपनिवेश बने और जैसे ही उपनिवेशों ने अपने शोषण के, अपनी दास्तां के दर्द को अनुभव किया, तो एक-एक उपनिवेशक हटते चले गए। वे स्वतंत्र हुए और ब्रिटेन की सामर्थ्य क्षीण हो गई। आज ब्रिटेन प्रथम शक्ति नहीं है। सोवियत संघ अपनी सीमाओं का विस्तार करता रहा, इसका मूल कारण चारों ओर के राज्यों में संगठित सरकार का अभाव था, द्वितीय महायुद्ध के पश्चात सोवियत संघ में पूर्वी यूरोप में मांस्को नियंत्रित सरकार की स्थापना कर, इस क्षेत्र पर अपना शक्ति प्रभाव स्थापित किया। 1946 में मध्य एशिया के टानु--टुआ तथा बाहरी मंगोलिया एवं सिंक्यांग प्रांत के कुछ भाग को भी सम्मिलित किया। जापान ने सखालिन द्वीप और कुरील द्वीप छीन लिए। 1950 के पश्चात पूर्व सोवियत संघ विश्व शक्ति के रूप में उभरने लगा और शीघ्र ही विश्व राजनीति के आकाश पर छा गया। यहां तक कि अनेक अवसरों पर अमेरिका भी इससे भयभीत रहने लगा। परिवर्तन आया और देशों ने, गणराज्यों ने, अपने को स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर दिया। 1991 तक सभी गणराज्य 14 स्वतंत्र राष्ट्र बन गए। रूस की शक्ति बिखर गई, क्योंकि रूस का विस्तार अपने लिए विस्तार था-

- उपनिवेशों के लिए कल्याण का मार्ग नहीं था ।
- विश्व का व्यापक हित कभी मस्तिष्क में नहीं था।
- अपने-अपने हित बाय उत्कर्ष के लिए देशों में जागृति हुई वह महान शक्ति बिखर गई।

ब्रिटेन व रूस के सामने ही यूरोप में जर्मनी और फ्रांस ही शक्ति का रूप ले सामने उभरे। 19वीं सदी में संपूर्ण पृथ्वी यूरोपीय राजनीतिक चेतना का अभिन्न अंग बन गई थी। पेरिस में शांति वार्ता के लिए एकत्र यूरोपीय तथा अमेरिकी राजनयिकों को मैकिंडर की सलाह थी की उन्हें भविष्य के खतरों की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए पूरी तरह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे पूर्वी यूरोप और हृदय स्थल क्षेत्र में ऐसी सारी संभावनाओं को समाप्त कर दें, जिनसे कि जर्मनी के विश्व विजय के इरादों को प्रोत्साहन मिल सकता हो।

जर्मनी से भय था कि वह विश्व भर में छा जाएगा। इसलिए अन्य सभी देश जर्मनी के विरोध में एक साथ जुड़ गए, जर्मनी का और शक्ति रूप में वरना और विश्व पर

छा जाना अपने लिए था और उसका उद्देश्य विश्व भर को अपने अधीन कर विश्व की सामर्थ्य को अपने लिए समेटना था। यह स्वार्थसनी चाह ध्वस्त होनी थी, मिट गई। जर्मनी के समान ही फ्रांस का विश्व भर में छा जाना धरा का धरा रह गया और जापान भी अपनी यह सोच िक ब्रिटेन के समान वह भी शक्तिशाली राष्ट्र बन कर छा जाएगा, ध्वस्त हो गई। संयुक्त राज्य अमेरिका इस समय विश्व में सबसे बड़ी शक्ति है और आतंक बनकर विश्व पर छाई है। खुशी सुरक्षा व समझौतों के माध्यम से अपने कार्य क्षेत्र को अति विस्तृत स्वरूप प्रदान किया है। अनेक क्षेत्रों में सैनिक अड्डों की स्थापना की और तकनीक तथा आर्थिक सहायता द्वारा विश्व के अनेक भागों को अपना राजनैतिक क्षेत्र बना लिया है।

प्रत्येक इकाई की चार अवस्थाएं होती हैं। बचपन, जवानी , प्रौढता और बुढ़ापा। अमेरिका अपनी अंतिम अवस्था में है। " अमेरिका ने अपने विकास की सर्वोच्च ऊंचाई छू ली। साधनों का अधिकतम दोहन कर लिया। प्रभाव का विस्तार जो होना था वह हो चुका। अब वह विश्व शक्ति के शिखर पर बैठा , अपने गिरने की स्थिति बना चुका है। वृद्धावस्था प्रारंभ हो चुकी है उभरती हुई शक्तियों के सामने उसे घुटने टेकने ही पड़ेंगे।"[30]

अमेरिका आर्थिक दृष्टि से क्षीड होता जा रहा है। आज का सबसे बड़ा कर्जदार देश बन गया है। विदेशी ऋण इस तीव्रता से अमेरिका पर बड़ा है कि उसकी कल्पना करना कठिन है। " अमेरिका उस व्यक्ति के समान है जो स्वयं को ऋण में डूब चुका है व दूसरों को दिया गया ऋण वापस प्राप्त करने की स्थिति में नहीं है। मार्टिन अमेरिका में आर्थिक नियमों के बिगड़ते स्वरूप पर चिन्हित है और फ्रीडमैन अमेरिका पर बढ़ते कर्ज के कारण परेशान हैं तो फेल्डस्टीन अमेरिका बजट घाटे के बढ़ने पर भयभीत हो रहे हैं।" [31] इसी तरह सामाजिक विकृतियों ने अमेरिका को घेर लिया । विश्व राजनीति में अब इंग्लैंड व फ्रांस आंख मूंदकर अमेरिका के पीछे खड़े नहीं दिखाई देते। कोई देश अमेरिका की धौंस में नहीं आता। जापान और चीन तो निश्चय ही अमेरिका की दादागिरी को चुनौती देते खड़े हैं।

अमेरिका वियतनाम के बाद कुवैत, ईरान व अफगानिस्तान में ध्वस्त होता चला जा रहा है

"This unilateral adventure has not only weekend U.S. in influence in the Arab and wider Muslim sphere what also severely undetermined its stature throughout the world, including among its closest allies. Future Washington administrations will have much to overcome in regaining International confidence and credibility. The Iraq war has laid to rest the assumption United State is the world's sole superpower and can secure global equilibrium"[32] अमेरिका का बाजार भी सिमट रहा है , यूरोप ने स्वयं अपना माल यूरोप में बेचा व विश्व में बेच रहा है। किसी भी समय अमेरिका सिकुड़ता हुआ पिछली पंक्ति में खड़ा हो जाएगा। क्योंकि -

- अमेरिका किसी संरक्षक का नहीं,
- विश्व हित के लिए बढ़ने वाला नहीं,
- शोषण उसका मुख्य उद्देश्य है,
- आतंकवाद व भय फैलाना उसका स्वभाव है,
- अन्य शक्तियां उभर कर उसको सीमित कर रही हैं, इसलिए अमेरिका का शक्तिक्षीण होना स्वभाविक है।

उभरती हुई शक्तियों की सीमाएं- (लिमिटेशंस)

निश्चित ही चीन नई शक्ति के रूप में उभर रहा है परंतु चीन की प्राकृतिक दशा वह चीन में अल्पसंख्यकों के उभरते रूप तथा विश्व में उसका अकेला होना और समीपवर्ती देशों से संघर्ष झेलना उसके लिए बहुत बड़ी बाधा है- *"Perhaps The most for reaching potential Geo political change is the prospective East Asia Coastal Seas Gatway reason that would like much of the present East Asia Realm To the Asia Pacific rim. it would also link the Asia Pacific Rim to the Russian for East. the new Gateway would be composed the China's 'Golden Coast' Taiwan and the unified Korea"* [33] निश्चय ही वह बढ़ेगा लेकिन उसी तेजी से पीछे भी चला जाएगा। यह उभरता हुआ चित्र चीन को विभाजित कर देगा। चीन का समुद्र तटीय क्षेत्र कोरिया

और जापान के साथ मिलकर एक नई शक्ति संरचित करेगा। चीन के अल्पसंख्यक क्षेत्र कुलबुला रहे हैं जो चीन के लिए किसी भी समय भयंकर संकट ला सकते हैं।

- विश्व शक्ति भारत-

अभी तक विश्व में उभरती हुई शक्तियों का दबदबा रहा। अपने लिए सब कुछ मिटाने व रौदने वाली सोच हावी रही। आज भी अमेरिका उसी सोच अल्मबरदार है । भारत स्वाभाविक रूप से इस सोच से अलग चलने वाला देश रहा है। उसके घर घर में, बच्चे बच्चे में, विश्व व सृष्टि की कल्याण भावना भरी है। सर्वे भवन्तु सुखिन:, प्रत्येक घर में गूंजता है। यज्ञ व शांति मंत्र "ओम द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष शान्ति:, पृथ्वी शांतिराप: , शांतिरोषधया: । वनस्पतय: शांतिर्विश्रेदेवा:, शांतिब्रह्म, शांति सर्व शान्ति:, शान्तिरेव शान्ति:, सा मा शान्तिरेधि ।।" घर घर गूंजा करता है, जिसके माध्यम से कण कण का कल्याण चाहा जाता है।

भारत विश्व की चेतना लेकर खड़ा, विश्व के लिए बना है व विश्व के माध्यम से सबके लिए चलता है। राम-रहीम व कृष्ण-रसखान की बात छोड़े, अभी-अभी महात्मा गांधी ने जवाहरलाल नेहरू ने विश्व बंधुत्व व विश्व कल्याण की ही बात की है। विश्व में उफनने वाली शक्तियों का युग विदा हो रहा है। **अब विश्व उस शक्ति को चाहता है जो समूचे विश्व का कल्याण करें, जो अपने लिए विश्व में शक्ति ना बने, बल्कि विश्व के उत्कर्ष के लिए बढ़ने वाली विश्व की शक्ति बने।** भारत विश्व चैतन्य व वैशिष्टय की समग्रता अपने में लेकर वहां विश्व के जीवन का आधार बना है जिसकी कल्याण भावना में संपूर्ण सृष्टि समा जाती है वह प्राण स्वरूपा विश्व शक्ति भारत है।

भारतीय उपमहाद्वीप जिसे कहते हैं, इस भौगोलिक भारत को टुकड़ों में बांट दिया है परंतु या प्रकृति के प्रतिकूल है। प्रकृति का संचरण विकृति को समाप्त कर देता है। बटे हुए जर्मनी एक हो गए। प्राकृतिक अर्थ का संचरण, कृषि का प्रवाह, जलवायु का प्रवाह, समाज का संबंध धरती से, संबंध का उभार अतीत व वर्तमान के साथ, भविष्य के भावनात्मक उभरते रिश्ते निश्चय ही पाकिस्तान, बांग्लादेश को भारत के साथ एक कर अखंडता स्थापित करेंगे। " पाकिस्तान का विलय होना व भारत का अखंड होना नियति हैजिसे रोका नहीं जा सकता"[34] इस

अखंड ईकाई भारतीय उपमहाद्वीप की स्वाभाविक स्थिति आने पर मनुष्य शक्ति, संसाधन शक्ति, प्राकृतिक शक्ति, भौगोलिक स्थिति व परिस्थिति सब मिलकर भारत को विश्व का सरकार बना देंगे। पड़ोस के देश विरोध ना कर उसके साथ जुड़ेंगे क्योंकि भारत किसी को दास नहीं बनाता, भारत किसी का शोषण नहीं करता, और इस पोषण तथा प्यार की बाहों में समीपवर्ती देशों को अपने में समेटता जाता है।

वर्तमान में हिंद महासागर पर नियंत्रण रखना सर्वाधिक महत्व का है, जो हिंद महासागर पर नियंत्रण रखेगा , वह यूरेशिया, अफ्रीका व ऑस्ट्रेलिया पर नियंत्रण रखेगा। स्वाभाविक ही वह विश्व शक्ति होगा। " जो भारत पर शासन करता है वह हिंद महासागर पर नियंत्रण रखता है। जो हिंद महासागर पर अधिकार रखता है, वह यूरेशिया अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया पर शासन करता है, जो इस विशाल भूभाग पर शासन करता है, वह विश्व पर शासन करता है।" [35] भौगोलिक, राजनीतिक, आर्थिक व स्वभाविक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए डॉ ब्रह्म दत्त अवस्थी का मानना है " आने वाला कल 'भारत का ' है। 21वीं सदी भारत की सदी है। कल्याण और शांति की सदी है। भारत केवल भारतीय शक्ति नहीं विश्व की शक्ति है, विश्व के लिए सकती है।" [36] पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम भारत को उभरते हुए रूप में देखते हैं और कैसे हैं " मुझे पूरा विश्वास है कि भारत में विकसित देशों की कतार में खड़ा होने की क्षमता मौजूद है और उसका या सपना अगले 15 वर्षों में पूरा हो सकता है।"[37]

भारत स्वाभाविक ही शक्ति संपन्न वन उभरता हुआ अपने समूचे क्षेत्र को अपने हाथों में समेट लेगा। *" In anticipation of India becoming a full member of the great power " club," New Indian Ocean Realm is likely to emerge. the relative weakening of Pakistan would enable India to focus more of its economic and political energies on the Indian Ocean Basin. This real wood ambresh the costlands of East Africa on the Western side of the Indian Ocean basin and mama on the basin's Bay of Bengal-Andaman Sea eastern side". [38]* चल रही

परिस्थितियों में भारतीय उपमहाद्वीप में पाकिस्तान का बिखरना एक स्वाभाविक घटना लगती है।

" One possibilities is the implosion of Pakistan, with its Pashtun Borderlands that lie between the durand line and Indus, joining Pashtun eastern and Southern parts of Afghanistan. Another is the creation of an independent Pakhtunistan in Confederation with Balochistan."[39] अफगानिस्तान में बहुत पहले ही 1893 में इस पश्तून एरिया को चाहा था व दावा किया था और वहां बलूचिस्तान को भी अपने ने मिलाना चाहता है। यह परिवर्तन इस भारतीय उपमहाद्वीप क्षेत्र के लिए नए रूप में शक्ति केंद्र बनने का अवसर प्रदान करता है। इससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण दिखाई पड़ता है प्रशांत महासागर में *"Perhaps the most far reaching potential geopolitical change this prospective East Asia coastal Sea Gatway region that would like the Asia Pacific Rim to the Russian for East"*[40] इस प्रकार यह चीन के लिए एक भयंकर आघात होगा। एक ओर समुद्र तटीय क्षेत्र जापान, ताइवान, सखलीन और पूर्वी रूस के साथ मिलाकर बड़ा क्षेत्र बनेगा, तो दूसरी ओर चीन के पश्चिम और दक्षिण क्षेत्र में उभरते हुए अल्पसंख्यकों से अक्षम बना देंगे। तिब्बत का मसला भी ठंडा नहीं हुआ व किसी समय परिस्थितियां उसे भयंकर रूप दे देगीं ।

उनका मानना है *कि " The twenty-first- century has become the "Global country", not the 'American' or the 'Pacific' one."*[41] बदलते हुए भू राजनैतिक परिदृश्य मे विश्व के देशों की आशायें भारत की ओर लगी हैं व भारत आशाओं को भौगोलिक सामर्थ्य के बल पर, ऐतिहासिक परंपराओं के बल पर तथा परिस्थितियों के आक्रामक व्यवहार केबल पर पूरा करने में भी समर्थ है। डॉ0 ब्रह्मदत्त अवस्थी अपने एक शोध लेख में 21वीं सदी के विश्व का मानचित्र समझाते हुए लिखते हैं हिंद महासागर रेल्म महानतम् शक्ति केंद्र बनकर उभरेगा, जिसका नियंत्रक भारत होगा। मानचित्र संख्या--(7.1)

आवश्यकता है योग्य नेतृत्व की, इच्छाशक्ति की, और अपने स्वभाव के अनुकूल योजना क्रियान्वयन की।

-: संदर्भ ग्रंथ :-

1- अवस्थी, ब्रह्मदत्त, 1996 विश्व शक्ति भारत', दष्टिबोध प्रकाशन, फर्रुखाबाद, पृष्ठ संख्या- 53

2- सक्सेना, हरिमोहन, 2010 राजनीतिक भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशंस, मेरठ पृष्ठ संख्या- 70

3- मामोरिया चतुर्भुज 2004 भारत का भूगोल, साहित्य भवन पब्लिकेशं,आगरा पृष्ठ संख्या -2

4- अवस्थी ब्रह्मदत्त 1996 विश्व शक्ति भारत दृष्टिबोध प्रकाशन फर्रुखाबाद पृष्ठ संख्या- 53

5- मामोरिया चतुर्भुज 2004 भारत का भूगोल साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा पृष्ठ संख्या 76

6- चौहान पी0 आर0 2009 भारत का बृहद भूगोल, वसुंधरा प्रकाशन गोरखपुर पृष्ठ संख्या 574

7- राव पी0 पी0 एशिया की भौगोलिक समीक्षा वसुंधरा प्रकाशन

8- जाट पी0सी0 2009 प्रकाशन गोरखपुर पृष्ठ संख्या 45 एशिया का भूगोल पंचशील प्रकाशन जयपुर पृष्ठ संख्या 145-146

9- E. Sourse www.tiptoptens.com/2011/05/07/top-10-tea-producing-countries

10 जाट पी0सी0 2009 एशिया का भूगोल पंचशील प्रकाशन जयपुर

11, 12 _____ पृष्ठ संख्या- 157, 103, 163

13 राव पी0पी0 एशिया की भौगोलिक समीक्षा वसुंधरा,

14, 15 _____ प्रकाशन गोरखपुर पृष्ठ संख्या 91, 97,56

16 E. Sourse — The World Bank, World Development Indicators

17. अवस्थी ब्रहमदत्त 1996 — विश्व शक्ति भारत दृष्टिबोध प्रकाशन

18.19.

20. दिशा 2010 — फरुखाबाद पृष्ठ संख्या 15, 18, 18
स्मारिका इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र दिल्ली पृष्ठ संख्या -15

21. अवस्थी ब्रहम दत्त 2002 — चिंतन धारा, नीलकंठ प्रकाशन,

22. _____ — नई दिल्ली पृष्ठ संख्या- 16, 59

23 . शर्मा श्री राम 2031 — भारतीय धर्म मानव धर्म', युग निर्माण

24_____ — योजना, मथुरा, भारत ,पृष्ठ संख्या 4,24

25 India- 1986(Annual) — A Reference Annual- nternational Data Management LTD. Pg. N -14

26. अवस्थी ब्रहम दत्त 1996 — विश्व शक्ति भारत दृष्टिबोध प्रकाशन 27,28
_____ — फरुखाबाद पृष्ठ संख्या 13,8,9

29, अवस्थी ब्रहम दत्त 1996 — हम एक हैं लोकहित प्रकाशन लखनऊ 15
_____

30 अवस्थी ब्रहम दत्त 1996 — विश्व शक्ति भारत दृष्टिबोध प्रकाशन ,

31_____ — फर्रुखाबाद संख्या 127, 132

32 Chen Saul Berendrd, 2010 — Geopolitical, Pentagon Press

33_____ — Delhi Pg. No. 422, 423

34. अवस्थी ब्रहम दत्त 1996 — विश्व शक्ति भारत दृष्टिबोध प्रकाशन

35 , 36_____ — फर्रुखाबाद, पृष्ठ संख्या - 73

37 कलाम एपीजे अब्दुल 2008 — भारत 2020, नव निर्माण की रूपरेखा, विकिंग पेनगान बुक्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड नई दिल्ली पृष्ठ संख्या- 33

38. Cohen, Saul Benendrd, 2010 — Geopolitical, Pentagon Press

39,40,41_____ — Delhi Pg. No 424,424, 427, 428